STUDYHUB.NET.IN

गुर्जर प्रतिहार वंश

उत्पत्ति, मण्डौर एवं कन्नौज शाखाएं, त्रिपक्षीय संघर्ष तथा साम्राज्य का पतन

🏰 1. उत्पत्ति और नामकरण — गुर्जर प्रतिहार कौन थे

राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में फैले **गुर्जरात्रा प्रदेश** से एक ऐसा वंश उठा जिसने आगे चलकर लगभग तीन शताब्दियों तक उत्तर भारत की राजनीति को दिशा दी। यह था — गुर्जर प्रतिहार वंश।

इस वंश का नाम ही एक कहानी कहता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इनका उत्पत्ति-स्रोत **लक्ष्मण** से जोड़ा जाता है, जो राम के द्वारपाल (प्रतिहार) थे। इसी कारण यह वंश 'प्रतिहार वंश' कहलाया। गुर्जर जाति से सम्बन्ध होने के कारण इतिहास में इन्हें 'गुर्जर प्रतिहार' कहा गया।

अभिलेखीय और विदेशी साक्ष्य

नीलकुण्ड, राधनपुर, देवली और करडाह शिलालेखों में इन प्रतिहारों को 'गुर्जर' के रूप में संदर्भित किया गया है।

स्रोत	इन्हें क्या कहा	संदर्भ
अरब यात्री	जुर्ज	सामान्य यात्रा वृत्तांत
अलमसूदी	अल गुर्जर, राजा को 'बोहरा'	संभवतः 'आदिवराह' का अपभ्रंश
ह्वेनसांग (चीनी यात्री)	कू-चे-लो	भीनमाल यात्रा, राजधानी को **'पीलोमोलो/भीलामाल'** कहा

🔑 **परीक्षा बिंदु:** ह्वेनसांग ने भीनमाल का नाम **'पीलोमोलो'** या 'भीलामाल' बताया था — यह सीधा MCQ बनता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार **रमेश चन्द्र मजूमदार** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से बारहवीं सदी तक अरब आक्रमणकारियों के विरुद्ध महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और **भारत के 'द्वारपाल'** के रूप में कार्य किया। यही वह भूमिका है, जो आगे नागभट्ट प्रथम के समय और स्पष्ट होकर सामने आती है।

मूल निवास स्थान को लेकर भी इतिहासकारों में मतभेद है। प्रतिहार नरेशों के जोधपुर और घटियाला शिलालेखों से स्पष्ट होता है कि इनका मूल निवास **गुर्जरात्र** था। इतिहासकार एच. सी. रे इनकी सत्ता का प्रारंभिक केन्द्र माण्डव्यपुर (मण्डौर) मानते हैं, जबकि अधिकांश इतिहासकार **अवन्ति या उज्जैन** को प्रारंभिक केंद्र मानते हैं।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** छात्र अक्सर मानते हैं कि गुर्जर प्रतिहारों की एक ही शाखा थी। वास्तव में **नैणसी ने इनकी कुल 26 शाखाओं** का वर्णन किया है — मण्डौर, जालोर, राजोरगढ़, कन्नौज, उज्जैन और भड़ौच इनमें प्रमुख रहीं।

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** परीक्षा में 'गुर्जर प्रतिहार' नाम की उत्पत्ति को लेकर तीन अलग-अलग सिद्धांत पूछे जा सकते हैं — पौराणिक (लक्ष्मण-प्रतिहार), जातीय (गुर्जर) और विदेशी विवरण (जुर्ज/अल-गुर्जर)। तीनों को अलग-अलग याद रखें, परीक्षक अक्सर इन्हें घुमा-फिराकर पूछते हैं।

👑 2. मण्डौर शाखा — सबसे प्राचीन और मूल शाखा

गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में मण्डौर शाखा को सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण माना जाता है। इसकी कहानी शुरू होती है एक ब्राह्मण की दो शादियों से।

जोधपुर और घटियाला शिलालेखों के अनुसार **हरिश्चन्द्र** नामक एक ब्राह्मण की दो पत्नियाँ थीं — एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। भद्रा से चार पुत्र हुए: भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दह। इन चारों ने मिलकर मण्डौर पर विजय प्राप्त की और गुर्जर प्रतिहार वंश की नींव रखी। **तीसरे पुत्र रज्जिल** के नाम से मण्डौर की वंशावली की निरंतरता शुरू होती है।

मण्डौर शाखा के प्रमुख शासक

शासक	प्रमुख कार्य / विवरण
नरभट्ट	गुर्जर प्रतिहारों के ब्राह्मण गुरुओं के संरक्षक — उपाधि 'पिल्लीपणी'। ह्वेनसांग ने इन्हें 'पेल्लोपेल्ली' कहा।
नागभट्ट प्रथम (मण्डौर शाखा)	मेड़ता पर विजय और उसे राजधानी बनाया, **'नाहड़'** के नाम से प्रसिद्ध।
शीलुक	सिद्धेश्वर महादेव मंदिर (जोधपुर) का निर्माता, वल्लमण्डल के भाटी शासक देवराज को हराया।
झोट	कुशल वीणा वादक, गंगा नदी में जलसमाधि ली।
कक्क	नागभट्ट द्वितीय (कन्नौज) के सामंत, मुंगेर के गौड़ शासकों से युद्ध लड़ा।
बाउक	837 ई. में मण्डौर के विष्णु मंदिर में प्रशस्ति लगवाई।
कक्कुक	घटियाला (861 ई.) में दो शिलालेख — **राजस्थान में सती प्रथा का पहला अभिलेखीय प्रमाण**।

💡 **परीक्षा ट्रिक:** मण्डौर के 4 संस्थापक भाई याद रखें — "भो-क-र-द" = भोगभट्ट + कद्दक + रज्जिल + दह। तीसरे भाई रज्जिल से वंशावली चलती है, यह सबसे ज़्यादा पूछा जाता है।

कक्क का परिवार थोड़ा उलझा हुआ है, इसलिए इसे स्पष्ट कर लेना ज़रूरी है। कक्क का विवाह भाटी वंश की राजकुमारी पद्मनी से हुआ, जिससे **बाउक** नामक पुत्र हुआ। कक्क की दूसरी रानी दुर्लभ देवी से **कक्कुक** का जन्म हुआ। यह छोटा-सा विवरण परीक्षा में Match the Column प्रश्न के रूप में बार-बार आता है।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** बाउक और कक्कुक को छात्र अक्सर एक ही व्यक्ति मानकर भूल कर बैठते हैं। याद रखें — **बाउक पद्मनी का पुत्र था** (837 ई. की प्रशस्ति), **कक्कुक दुर्लभ देवी का पुत्र था** (861 ई. का घटियाला अभिलेख)।

घटियाला अभिलेख का महत्व इतना अधिक है कि इसे अलग से समझना ज़रूरी है। यह स्तम्भ जोधपुर से 22 मील दूर 'माता की साल' नामक जैन मंदिर के पास स्थित है। इसमें चार संस्कृत लेखों का समूह है, जो कक्कुक की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक उपलब्धियों का वर्णन करते हैं। इसी अभिलेख में 'मग' जाति के ब्राह्मणों का उल्लेख भी मिलता है, जो ओसवाल समाज के आश्रय में रहकर जैन मंदिरों में पूजा सम्पन्न करवाते थे — यह तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था की परतों को भी उजागर करता है।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** घटियाला अभिलेख के अनुसार राणुका की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी सम्पल देवी सती हुई — **राजस्थान में सती प्रथा का यह पहला अभिलेखीय प्रमाण है।** यह तथ्य लगभग हर परीक्षा में पूछा गया है।

⚔️ 3. जालौर-उज्जैन-कन्नौज शाखा — साम्राज्य की वास्तविक नींव

यदि मण्डौर शाखा प्रतिहारों की जड़ है, तो जालौर-उज्जैन-कन्नौज शाखा इस वंश का वह तना है जिसने पूरे उत्तर भारत पर छाया डाली। इसी शाखा के शासकों ने प्रतिहारों को क्षेत्रीय सत्ता से साम्राज्यिक शक्ति में बदला।

नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.) — साम्राज्य का प्रारंभिक स्तम्भ

आठवीं शताब्दी में नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल पर विजय प्राप्त कर उसे अपनी राजधानी बनाया, और उसके बाद उज्जैन को भी अपने नियंत्रण में लेकर उसे अपनी शक्ति का मुख्य केन्द्र बना लिया। उनका दरबार **'नागावलोक का दरबार'** कहलाता था।

अमोघवर्ष के संजन ताम्रपत्र के अनुसार राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग ने हिरण्यगर्भ यज्ञ में अवन्ति नरेश (नागभट्ट प्रथम) को **'प्रतिहार'** का कार्य सौंपा था — यानी राष्ट्रकूट जैसी प्रतिद्वंद्वी शक्ति भी उस समय नागभट्ट की हैसियत स्वीकार कर रही थी।

उनके शासनकाल में सिन्ध से बिलोचों ने और अरब से आक्रमणकारियों ने हमला किया। नागभट्ट ने इन्हें अपनी सीमा में प्रवेश करने से रोक दिया, जिससे उनकी ख्याति बहुत बढ़ी। ग्वालियर प्रशस्ति में उन्हें **'नारायण'** और 'म्लेच्छों का नाशक' कहा गया है।

> 🔑 **परीक्षा बिंदु:** "गुर्जर प्रतिहार वंश के किस शासक ने अपनी राजधानी मण्डोर से मेड़ता स्थानांतरित की?" — यह एक बार-बार दोहराया जाने वाला प्रश्न है, उत्तर है **नागभट्ट प्रथम**। ध्यान रहे, इसके बाद उन्होंने भीनमाल और फिर उज्जैन को केन्द्र बनाया।

नागभट्ट प्रथम के उत्तराधिकारी कुक्कुक और देवराज हुए, परन्तु इनके शासनकाल में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। नागभट्ट प्रथम को क्षत्रिय ब्राह्मण भी कहा जाता है, इस कारण इस शाखा को रघुवंशी प्रतिहार भी कहते हैं।

वत्सराज (783-795 ई.) — त्रिपक्षीय संघर्ष का सूत्रपात

देवराज की मृत्यु के बाद उनके पुत्र वत्सराज शासक बने। उन्होंने भण्डी वंश को पराजित किया और बंगाल के पाल शासक धर्मपाल को भी हराया। उनकी रानी सुन्दरदेवी से नागभट्ट द्वितीय का जन्म हुआ, जिन्हें 'नागवलोक' कहा जाता है।

वत्सराज का दरबार साहित्यिक दृष्टि से भी समृद्ध रहा। उनके समय **उदयोतन सूरी ने 'कुवलयमाला'** और जैन **आचार्य जिनसेन ने 'हरिवंश पुराण'** की रचना की। उन्होंने ओसियां में सूर्य और जैन मंदिरों का निर्माण भी करवाया — ओसियां के मंदिर महामारू शैली में, जबकि **हरिहर मंदिर पंचायतन शैली** में बने। ओसियां को इस कारण **राजस्थान का भुवनेश्वर** भी कहा जाता है।

> 💡 **अनुभवी टिप्पणी:** ओसियां सिर्फ स्थापत्य का केन्द्र नहीं था — यह वत्सराज के समय जैन और शैव दोनों परम्पराओं के सह-अस्तित्व का प्रमाण भी है। परीक्षा में यह 'पंचायतन शैली' के उदाहरण के रूप में पूछा जाता है।

इसी समय से कन्नौज पर अधिकार के लिए बंगाल से पाल, दक्षिण से राष्ट्रकूट और उत्तर-पश्चिम से उज्जैन के प्रतिहारों के बीच संघर्ष चला, जिसे इतिहास में **'त्रिपक्षीय संघर्ष'** कहा जाता है। इस संघर्ष की शुरुआत वत्सराज ने की — उन्होंने कन्नौज के शासक इन्द्रायुध को पराजित किया। इसी कारण वत्सराज को **'रणहस्तिन्'** और प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।

वत्सराज ने मुंगेर के युद्ध में पाल शासक धर्मपाल को हराया, जिसमें कक्क प्रतिहार और सांभर के चौहान शासक दुर्लभराज ने उनका साथ दिया — यानी इस युद्ध में राजपूताना की दो शक्तियाँ साथ खड़ी थीं। लेकिन यह विजय अधिक समय तक नहीं टिक सकी। समकालीन राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने वत्सराज पर आक्रमण कर उन्हें पराजित किया। ध्रुव ने धर्मपाल को भी हराया और गंगा-यमुना के चिह्नों को अपने कुलचिह्न में जोड़ लिया।

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.) — कन्नौज का स्थायी विजेता

वत्सराज के बाद नागभट्ट द्वितीय ने शासन संभाला। **816 ई. में** उन्होंने कन्नौज पर आक्रमण कर चक्रायुध को पराजित किया और **कन्नौज को प्रतिहार वंश की स्थायी राजधानी** बना लिया।

हर्षनाथ प्रशस्ति के अनुसार उनके दरबार में चौहान गुवक प्रथम को 'वीर' की उपाधि दी गई थी — यह दर्शाता है कि प्रतिहार-चौहान सम्बन्ध सिर्फ युद्ध तक सीमित नहीं, सम्मान के स्तर तक पहुँचे थे। बकुला अभिलेख में उन्हें 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' कहा गया है।

चंद्रप्रभा सूरी के ग्रंथ 'प्रभावक चरित' के अनुसार नागभट्ट द्वितीय ने **833 ई. में गंगा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली** — एक ऐसा अंत, जो उस युग के कई शासकों के लिए धार्मिक मोक्ष का प्रतीक माना जाता था। उनके बाद पुत्र रामभद्र ने शासन संभाला, परन्तु उनका शासनकाल अत्यंत अल्पकालिक और बिना किसी उल्लेखनीय कार्य के बीता।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** "कन्नौज पर स्थायी अधिकार किसने किया?" के उत्तर में छात्र अक्सर वत्सराज लिख देते हैं, जबकि वत्सराज ने केवल शुरुआत की थी — स्थायी विजय **नागभट्ट द्वितीय (816 ई.)** की है।

मिहिरभोज प्रथम (836-885 ई.) — साम्राज्य का स्वर्णकाल

मिहिरभोज प्रथम रामभद्र के पुत्र और वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। उनका सबसे पहला अभिलेख वराह अभिलेख है, जिसकी तिथि 836 ई. है।

अरब यात्री **सुलेमान** ने मिहिरभोज के समय भारत की यात्रा की और उन्हें **भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया**, जिसने अरबों को रोक दिया। कश्मीरी कवि कल्हण ने अपनी 'राजतरंगिणी' में भी मिहिरभोज के प्रशासन की प्रशंसा की है।

मिहिरभोज ने राष्ट्रकूटों को पराजित कर उज्जैन पर पुनः अधिकार कर लिया — इस समय राष्ट्रकूट वंश में कृष्ण द्वितीय का शासन था। ग्वालियर अभिलेख में उनकी उपाधि **'आदिवराह'** मिलती है, जबकि दौलतपुर अभिलेख में उन्हें **'प्रभास'** कहा गया है। उनके समय प्रचलित चांदी और तांबे के सिक्कों पर **'श्रीमदादिवराह'** अंकित था।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** ग्वालियर अभिलेख में उज्जैन के प्रतिहारों को क्षत्रिय कहा गया है, और नागभट्ट को 'राम का प्रतिहार' तथा 'विशुद्ध क्षत्रिय' बताया गया है — यह बिंदु RSMSSB की कई भर्ती परीक्षाओं में पूछा जा चुका है।

स्कन्धपुराण के अनुसार मिहिरभोज ने तीर्थयात्रा के लिए राज्य भार पुत्र महेन्द्रपाल को सौंप दिया और सिंहासन त्याग दिया — सत्ता हस्तांतरण का यह शान्तिपूर्ण तरीका कई अन्य समकालीन वंशों से प्रतिहारों को अलग करता है।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** मिहिरभोज (गुर्जर प्रतिहार, उज्जैन-कन्नौज) को **परमार वंश के राजा भोज** (धार, 11वीं शताब्दी) से न जोड़ें — दोनों अलग वंश और अलग समय के शासक हैं। यह राजस्थान GK की सबसे common confusion में से एक है।

महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.) — साहित्य का संरक्षक

महेन्द्रपाल प्रथम के गुरु और आश्रित कवि **राजशेखर** थे, जिन्होंने **कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, विद्धसालभंज्जिका, बालभारत, बालरामायण, हरविलास और भुवनकोश** जैसे ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों में महेन्द्रपाल को 'रघुकुल चूड़ामणि' और 'निर्भय नरेश' कहा गया है। उनके दो पुत्र थे — भोज द्वितीय और महिपाल प्रथम।

महिपाल प्रथम (914-943 ई.) — संकट की शुरुआत

महिपाल के शासनकाल में राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने प्रतिहारों को हराकर **कन्नौज को नष्ट कर दिया** — यह घटना प्रतिहार साम्राज्य के पतन की पहली बड़ी चेतावनी थी। राजशेखर ने, जो अब भी दरबार में थे, महिपाल को 'आर्यावर्त का महाराजाधिराज' और 'रघुकुल मुकुटमणि' की संज्ञा दी। इसी समय **अरब यात्री अलमसूदी** ने भारत की यात्रा की और महिपाल के राज्य को **'अल गुर्जर'** कहा।

राज्यपाल और यशपाल — पतन की अंतिम कड़ी

1018 ई. में **मुहम्मद गजनवी** ने प्रतिहार राजा राज्यपाल पर आक्रमण किया — उत्तर भारत की राजनीतिक भू-राजनीति बदलने वाली यह घटना प्रतिहार शक्ति को गहरा आघात देती है।

यशपाल प्रतिहारों के अंतिम राजा थे। गहड़वाल वंश के चन्द्रदेव ने प्रतिहारों से कन्नौज छीनकर इस वंश के अस्तित्व को समाप्त कर दिया। हालांकि इसके बाद भी गुर्जर प्रतिहारों ने कुछ समय तक सामंतों के रूप में स्थानीय सत्ता बनाए रखी, लेकिन एक स्वतंत्र साम्राज्य के रूप में उनकी कहानी यहीं समाप्त हो गई।

🗺️ संपूर्ण वंशावली एक नज़र में

हरिश्चन्द्र (मण्डौर, संस्थापक, छठी शताब्दी) ↓ रज्जिल शाखा — मण्डौर के स्थानीय प्रतिहार (नरभट्ट, शीलुक, झोट, कक्क, बाउक, कक्कुक) ↓ नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.) — भीनमाल → मेड़ता → उज्जैन ↓ वत्सराज (783-795 ई.) — कन्नौज विजय, त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारम्भ ↓ नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.) — कन्नौज को स्थायी राजधानी बनाया (816 ई.) ↓ रामभद्र (833 ई., अल्पकालिक) ↓ मिहिरभोज प्रथम (836-885 ई.) — साम्राज्य का चरम विस्तार, उपाधि 'आदिवराह' ↓ महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.) — कवि राजशेखर का संरक्षण ↓ महिपाल प्रथम (914-943 ई.) — इन्द्र तृतीय द्वारा कन्नौज नष्ट, अलमसूदी की यात्रा ↓ राज्यपाल (...–1018 ई.) — मुहम्मद गजनवी का भयंकर आक्रमण ↓ यशपाल (अंतिम शासक) → चन्द्रदेव गहड़वाल द्वारा कन्नौज पर अधिकार — वंश का पूर्ण अंत

🗡️ 4. त्रिपक्षीय संघर्ष — एक विशेष विश्लेषण

इतने सारे शासकों, इतनी सारी जीतों और हारों के बीच एक घटना ऐसी है जो हर परीक्षा में अलग से पूछी जाती है — **त्रिपक्षीय संघर्ष**। आइए इसे परत-दर-परत समझें।

कन्नौज उस समय उत्तर भारत की सबसे समृद्ध और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण नगरी थी। इस पर अधिकार का मतलब था — पूरे गंगा-यमुना दोआब पर नियंत्रण। यही कारण था कि तीन शक्तियाँ इसे पाने के लिए जुट गईं:

> **वत्सराज (प्रतिहार)** — इन्द्रायुध को हराकर कन्नौज पर अधिकार
> ↓
> **राष्ट्रकूट ध्रुव का आक्रमण** — वत्सराज पराजित, ध्रुव दक्षिण लौटा
> ↓
> **नागभट्ट द्वितीय (प्रतिहार)** — 816 ई. में चक्रायुध को हराकर **कन्नौज पर पुनः अधिकार**
> ↓
> **राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय का आक्रमण** — नागभट्ट द्वितीय अस्थायी रूप से पराजित
> ↓
> **मिहिरभोज प्रथम** — साम्राज्य चरम पर, राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय को पराजित किया
> ↓
> **राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय** — महिपाल प्रथम के समय कन्नौज को भारी क्षति
> → दीर्घकालिक परिणाम: प्रतिहार शक्ति स्थायी रूप से क्षीण होने लगी
> → **अल्पकालिक परिणाम: स्थायी नियंत्रण फिर भी प्रतिहारों के पास ही रहा**

🔑 **परीक्षा बिंदु:** [RPSC द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 28 अक्टूबर 2018] में पूछा गया था — "कन्नौज पर अधिकार हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष में राजपूताना के किस वंश के शासकों ने भाग लिया?" उत्तर: **गुर्जर प्रतिहार**।

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** परीक्षक अक्सर यह पूछते हैं कि "त्रिपक्षीय संघर्ष में अंतिम विजय किसकी हुई?" — सीधा उत्तर है **गुर्जर प्रतिहारों की**, क्योंकि उन्होंने सबसे लंबे समय (लगभग सौ वर्ष से अधिक) तक कन्नौज पर शासन किया। लेकिन यह भी ध्यान रखें कि दीर्घकाल में राष्ट्रकूटों के आक्रमणों ने ही प्रतिहार साम्राज्य को सबसे अधिक कमजोर किया।

📚 5. साहित्य, स्थापत्य और सिक्के — सांस्कृतिक योगदान

गुर्जर प्रतिहारों का योगदान सिर्फ युद्धों तक सीमित नहीं था। उनके दरबारों ने संस्कृत साहित्य, स्थापत्य कला और मुद्रा-व्यवस्था को भी समृद्ध किया।

क्षेत्र	प्रमुख योगदान	शासनकाल / शासक
साहित्य	कुवलयमाला (उदयोतन सूरी), हरिवंश पुराण (जिनसेन)	वत्सराज
साहित्य	कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा आदि (राजशेखर)	महेन्द्रपाल प्रथम
स्थापत्य	ओसियां के सूर्य व जैन मंदिर (महामारू व पंचायतन शैली)	वत्सराज
स्थापत्य	सिद्धेश्वर महादेव मंदिर, जोधपुर	शीलुक
मुद्रा	'श्रीमदादिवराह' अंकित चांदी-तांबे के सिक्के	मिहिरभोज प्रथम
अभिलेख	घटियाला अभिलेख, बाउक प्रशस्ति, ग्वालियर अभिलेख	कक्कुक, बाउक, मिहिरभोज

🛕 **परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है:** "ओसियां को **राजस्थान का भुवनेश्वर** क्यों कहा जाता है?" — उत्तर है, वहाँ की मंदिर-शृंखला (हरिहर, सूर्य, जैन मंदिर) ओड़िशा के भुवनेश्वर मंदिर-समूह जैसी स्थापत्य-समृद्धि दर्शाती है।

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** ध्यान दें कि **वत्सराज** और **महेन्द्रपाल प्रथम** — दोनों ही ऐसे शासक हैं जिनका साहित्यिक संरक्षण उनकी सैनिक उपलब्धियों जितना ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यह दर्शाता है कि गुर्जर प्रतिहार दरबार युद्ध और कला दोनों में समानांतर रूप से समृद्ध रहा।

❓ PYQ — परीक्षा में पूछे गए प्रश्न

Q1. कन्नौज पर अधिकार हेतु चले त्रिपक्षीय संघर्ष में राजपूताना के किस वंश के शासकों ने भाग लिया? (RPSC 2nd Grade 2018)
(A) चौहान
(B) गुर्जर प्रतिहार ✓
(C) परमार
(D) गहलोत
व्याख्या: त्रिपक्षीय संघर्ष में पूर्व से पाल, दक्षिण से राष्ट्रकूट और उत्तर-पश्चिम से गुर्जर प्रतिहार शामिल थे। राजपूताना से केवल गुर्जर प्रतिहारों ने भाग लिया।

Q2. राजस्थान में प्रतिहार वंश के संस्थापक हरिश्चन्द्र की राजधानी कौन सी थी? (Forest Guard 2022)
(A) मण्डाना

(B) भीनमाल
(C) मेड़ता
(D) मण्डोर ✓
व्याख्या: घटियाला शिलालेख के अनुसार हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों ने मिलकर मांडव्यपुर (मण्डोर) को जीतकर राजधानी बनाया था।

Q3. गुर्जर प्रतिहार वंश के किस शासक ने अपनी राजधानी मण्डोर से मेड़ता स्थानान्तरित की थी? (Librarian 2020 / RPSC 2017)
(A) कक्कुक
(B) रज्जिल
(C) नागभट्ट प्रथम ✓
(D) बाउक
व्याख्या: नागभट्ट प्रथम (नाहड़) ने मण्डोर से मेड़ता को राजधानी बनाया, बाद में भीनमाल और अंततः उज्जैन को केंद्र बनाया। यह प्रश्न कई बार दोहराया गया है।

Q4. किस अभिलेख में उज्जैन के प्रतिहारों को क्षत्रिय कहा गया है? (Junior Instructor 2024)
(A) घोसुंडी अभिलेख
(B) चीरवा अभिलेख
(C) घटियाला अभिलेख
(D) ग्वालियर अभिलेख ✓
व्याख्या: मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति (लगभग 880 ई.) में उज्जैन के प्रतिहारों को क्षत्रिय और नागभट्ट को 'राम का प्रतिहार' कहा गया है।

Q5. नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर स्थायी अधिकार किस वर्ष किया? (अभ्यास प्रश्न)
(A) 783 ई.
(B) 795 ई.
(C) 816 ई. ✓
(D) 836 ई.
व्याख्या: 816 ई. में नागभट्ट द्वितीय ने चक्रायुध को पराजित कर कन्नौज को प्रतिहार वंश की स्थायी राजधानी बनाया।

Q6. अरब यात्री सुलेमान ने किस गुर्जर प्रतिहार शासक को भारत का सबसे शक्तिशाली राजा बताया? (REET अभ्यास)
(A) नागभट्ट प्रथम
(B) वत्सराज
(C) मिहिरभोज प्रथम ✓
(D) महिपाल प्रथम
व्याख्या: सुलेमान ने मिहिरभोज के समय भारत यात्रा की और उन्हें सबसे शक्तिशाली शासक बताया, जिसने अरबों को रोका।

🗝️ गुर्जर प्रतिहार वंश — स्मरणीय संकेत (Memory Tricks)

- **मण्डौर के 4 संस्थापक भाई:** "भो-क-र-द" = भोगभट्ट + कद्दक + रज्जिल + दह।
- **त्रिपक्षीय संघर्ष के 3 पक्ष:** "पा-रा-प्र" = पाल + राष्ट्रकूट + प्रतिहार।
- **नागभट्ट प्रथम की राजधानियाँ (क्रम):** "म-मे-भी-उ" = मण्डोर → मेड़ता → भीनमाल → उज्जैन।
- **कक्क के पुत्र-रानी:** "दुर्लभ से कक्कुक, पद्मिनी से बाउक" — तुक से याद रखें।
- **कन्नौज-विजय शासक क्रम:** "व-शुरू, ना-स्थायी" = वत्सराज ने शुरू की, नागभट्ट द्वितीय ने स्थायी बनाई।

- **वंश का अंत:** "य-कन्नौज-ग" = यशपाल से कन्नौज छीना गहड़वाल वंश के चन्द्रदेव ने।

📚 Quick Revision Box — गुर्जर प्रतिहार वंश

उत्पत्ति: लक्ष्मण (राम के द्वारपाल) से सम्बद्ध | गुर्जर जाति से नामकरण
शाखाएँ: नैणसी अनुसार 26 शाखाएँ — मण्डौर सबसे प्राचीन

मण्डौर शाखा:
→ संस्थापक: हरिश्चन्द्र (4 पुत्र: भोगभट्ट, कद्दक, **रज्जिल**, दह)
→ कक्कुक का घटियाला अभिलेख (861 ई.) — **राजस्थान में सती प्रथा का पहला प्रमाण**

जालौर-उज्जैन-कन्नौज शाखा (साम्राज्य):
→ **नागभट्ट प्रथम (730-760):** भीनमाल → मेड़ता → **उज्जैन**, अरबों को रोका
→ **वत्सराज (783-795):** कन्नौज विजय (इन्द्रायुध को हराया), त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू, राष्ट्रकूट ध्रुव से हारा
→ **नागभट्ट द्वितीय (795-833): 816 ई.** में चक्रायुध को हराकर कन्नौज स्थायी राजधानी, गंगा में आत्महत्या
→ **मिहिरभोज प्रथम (836-885):** साम्राज्य चरम पर, सुलेमान ने 'सबसे शक्तिशाली शासक' कहा, उपाधि 'आदिवराह'
→ **महेन्द्रपाल प्रथम (885-910):** कवि **राजशेखर** का संरक्षण (कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा)
→ **महिपाल प्रथम (914-943):** राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय ने कन्नौज नष्ट किया
→ **राज्यपाल:** 1018 ई. में मुहम्मद गजनवी का आक्रमण
→ **यशपाल: अंतिम शासक** — चन्द्रदेव गहड़वाल ने कन्नौज छीना

त्रिपक्षीय संघर्ष: पाल (धर्मपाल) + राष्ट्रकूट (ध्रुव, गोविन्द III, इन्द्र III) + प्रतिहार
→ शुरुआत: वत्सराज | स्थायी विजय: नागभट्ट द्वितीय

साहित्य: कुवलयमाला (उदयोतन सूरी), हरिवंश पुराण (जिनसेन), कर्पूरमंजरी (राजशेखर)
स्थापत्य: औसियां मंदिर समूह (वत्सराज काल) — महामारू व पंचायतन शैली